

उमरुयेवनं चैव कथं श्रीमहा ॥ सहा चैव वरुणं चैव वरुणं नमस्तु ॥ ॥

वृष्णायनी

वाहीच

ग ॥

॥ धेयच कामाक्षी च महादेवी वैष्णवी च नमस्तु ॥ वा

॥ निर्भयकालिका देवी महालक्ष्मी नमस्तु

॥ स्वमिव सकलरावणवशावी

॥ व्यामहगिमां नूकंया ॥

॥ वसं धिदं ॥ विह्वलस्कं

॥ वज्रघट्टवादनस्तु ॥

शुभककार्त्तुः शुभकवाचः शुभक
शुभकनामधेयस्य
ॐ श्रीभिनसूर्याय नमः
स्तुतयक ॥ ॥ धनधूकनः श्रीसूर्या
कैलावपादार्धनयक ॥ श्रीसूर्याय पाद्याचम
ॐ श्रीसूर्याय स्वाहा ॥ ॐ सामाय स्वाहा ॥ ॐ श्री
गात्राय स्वाहा ॥ ॐ वृहस्पतये स्वाहा ॥ ॐ भुक्त्राय स्वाहा ॥ ॐ भुक्त्राय स्वाहा ॥ ॐ भुक्त्राय स्वाहा ॥

वायस्वाहा ॥ वाहवाहा ॥ ॐ कगवस्वाहा ॥ ॐ जन्मनकुपयस्वाहा ॥ ॐ वज्रपू
 षं प्रति ॥ सिद्धलंगिक ॥ श्रीसूर्याय वेदने नमः ॥ ॐ कं का का वाय
 क ॥ श्री ॥ काय ॥ श्रीसूर्याय पूषं नमः ॥ किं गालगन
 मसंकां ॥ का ॥ धयं महाशूनिं ॥ न
 ॥ संखसजा किल खजानका ॥
 नामय ऊमानस्य
 देवगायूजा क ॥ गुवववजाचार्याय ह

॥ अकिगनक ॥ रुक्माहं त्वं नमस्यामि शु
॥ नवायक ॥ आचमनं प्र
॥ काहा ॥ कायविष्णुधनखाहा ॥ याद
लोचनकमय ॥ ॐ नमो रगवग ॥ ॥ दानय
सपथानामधयस्यथ ॥ अष्ठाकरुलप्राप्ति
कामनया ॥ ॥ रुद्रवगापूजाक ॥ श्रीसंपूर्णकलम ॥ गद्यमहाकाल ॥ रुद्रने
दिकम्बवश्रायूवद्यादि ॥ पंचागमागा ॥ वैष्णवल ॥ अरुनिरुनिमाहनि ॥ वज्रवा

वाहि. श्रीवाचूष्मी. वज्रकमटक. अष्टमेववमृष्टमात् कावल्यादिआवाहनस्य १४ यं
वायवाचपुत्रात् ॐ ह्रीं पूषा राजनादिसंकल्पयाम्यहं ॥ ॥ धनकि. गालगने ॥

ॐ नमः
यत्संग

श्री × गहापंपूजायाय ॥ देवयामस्तानयागक
पूर्वजानि ॥ निशामिषसत्त्वजनकस्य महामूर्ख
सक ॥ अविभयकाय ॥ अरिभयंम
ये ॥ कालयसमूर्ख ॥ ॥ क्रसकनकेन ॥
पुण्याहलादि ॥ अमनः प्राणसंबुद्धरुडकर्मकृत्वा रुवश ॥ ॥

कमलपत्र
माला
धर्मोत्तम

कंनय ॥ ॐ नमो भगवते श्रीगुरुभ्यो नमः प्रणम्य कृत्यान्नापराधमाया हर्षसम्पत्

संयत् २ भाग २ दान २ अन्न २ आय २ हय २ कर्म २ समूह २ व २ ॥

॥ धृष्ट ॥ रगधर श्रीमच्छ्री श्रीमूर्तदवगापूजनाय ॐ दंव

काधूपो

ममिनमशा।

॥ ह्रीं स्वस्ति ॥ ॐ ह्रीं स्वस्ति ॥ सर्वधर्माणि सु

रावणद्वारः १२५॥ अन्यग्राह्यनवजस्ररावात्मकाः १२५॥ ॐ वज्रचक्रं वज्राकृष्टं वज्राकृष्टं

४ वंङयाभरु वङासुनटवं वङावंगहा ॥ ॥ यादार्घनय ॥ रुगवनधीमकुधीश्रुमुक

देवगारुडावकाशयोद्यावमनार्थप्रगिच्छस्वाहा॥ ॥ देवस्वयंप्रसादनवाय॥ पूजा. ला

स्याः स्फाप्र ॥ ॥ धालमं उलथिल ॥ पूरं क्वाच सर्वविद्यान क्वाच वज्ररुमिव जलरवस्
लख सर्वगथागमश्रुतिनिष्ठ उवाहा ॥ ॥ घनासंवाये ॥ ॐ वज्रसूत्रं वज्र
धाचं प्रमिक्तं ॥ ॥ सिद्धलं गिक्तं ॥ चंदनं सिंधुचंपूष्यं पवित्रं पायनासनं ॥ आ
पदं हय ॥ ॥ न श्रीगिक्तं उवाहा ॥ ॥ उज्जमका ॥ ॐ दं पदमं वस्तुना नाचं ग
या क्वाच प्रमिक्तं क्वाच यथासुखं ॥ ॥ चानक्वाच ॥ माधविमा
तिष्ठ पूष्यसंयुक्तं प्रमिक्तं क्वाच यथासुखं ॥ ॥ नेवद्यक्वाच
संयुक्तं रवाद्यं यथासुखं ॥ ददायि यथासुखं क्वाच प्रमिक्तं क्वाच यथासुखं

॥ स्वागताधर्मवाजानामइ वागविवर्जितं ॥ इहिनाइहिगविनिर्मकं प्रणि
 मूरं ॥ यानकाय ॥ खाडकाय ॥ कंरुनिर्कंरुनिवडवावाहिकाभध्ववी
 र्दनीइंसाहा ॥ यानकाय ॥ इकाचपंचमंदवईकाचसिद्धिराजनं ॥ ईकाच
 एवमन्तं ॥ काचायनमाकुम ॥ ॥ थनंतिगुचमंठलदनं ॥ लखवलिविय ॥
 कुमापनयाय ॥ ॥ थनसलिलसचिकन ॥ लाडा ॥ सलिव कायरमंठलसग
 याठापूजायाय ॥ पंचवूढस्वचूपं सलिवपूजा वडवावाहिसचूपंकायरपूजा ॥
 न्यासजाप ॥ ॥ धूप ॥ धीपचवूढ वडवावाहि रहाचकायशाचाधनायवडाधू

पंविर्ग्याक्यामिनमः॥ ॥ यादार्घ्यमय॥ श्रीपंचवूहवज्रवाचाहिरहाचकल्य४पाद्यं
प्रगिच्छस्वाहा॥ ॥ स्नानवाय॥ ॐ आर्यवेजनायस्वाहा॥ ॐ अक्राणायस्वाहा
ॐ चक्षुसेयस्वाहा॥ ॐ अमिषायस्वाहा॥ ॐ अमाघसिद्धयस्वाहा॥ धूमिसलि
वस॥ ॥ ॐ वज्रवाचाहिरहाचकल्य॥ ॐ हं यो यामिनीयकुरु॥ ॐ क्रीमांमाहि
नी॥ ॐ क्रीक्रीसंवासनीयकुरु॥ ॐ क्रीक्रीसंवासनीयकुरु॥ ॐ कुरु॥
ॐ कुरु॥ ॥ पंचायवाचपूजा॥ लास्याः साध्या॥ ॐ नमः श्रीपंचवूहानां अक्रा
णवेवमरध्ववेवाचनं नार्थं श्रीपंचवूहान्नमाम्यहं॥ ॥ नत्वा श्रीवज्रवाचादीस

थनमहं ॥ मंत्रमहं ॥ १२ रुद्रमहं ॥ वजनं धिय ॥ ४

वध्वं मनीदवीद्वहं हलदाविनी ॥ ॥ सिंधूचथकालिल
उल्ल
लोका
का ॥ उद्यानमवक्रगानिचधुगाविद्युगाहासवाजगधवीप्रितियात्र
शीपूषधावापूचतावृ... नमागवा विवाविकचूषासानंदसिंधाहवा
रावराववि... नाश्रीवक्रवावाहिकापाउवश ॥ ॥ थनथकालि-चहस्यमधुलदन
कं गुचूमधुलनयास्वानवायक ॥ पंचायवाचपूजा ॥ मृष्टुं गळ्णादि ॥ दानपणिय
ऊमानस्यथानामधयस्य मृमूकदवगाप्रीनयसंपूर्णकलभर्वनादिआवाह
नस्यपंचायवाचपूजाकर्तुं ०० दं चहस्यमधुलनसूसमाहिगश ॥ स्नानकि काय ॥ प्रिसमा

धिजागयाय ॥ ॥ ॐ नमः श्रीचक्रसंवाय ॥ स्नानथगिन ॥ धात ३ ॥ समन्वाहचं
 उमावृद्धाव (भयादिद्रुसंस्तिगा ॥ ३ ॥ वक्रसत्वा इहमाचार्यदेवगाकत्यायाम्पहं
 ॥ वंदरवादि समगलसंवायनीयं भक्तुचूंयत्यभ दनममार्यहानसंराव श्रीमन
 वक्रजाकायगाकिनीचक्रवर्त्तनी यंचरुनत्रिकायाययाधायकगननमः ॥ यावन्ता
 वक्रजाकिनीश्च नमस्कृत्यावंदना काकृत्यप्रवर्त्तिताकादगीहानमः ॥ ॥
 स्वरावधुक्ताः सर्वधर्माः स्वरावधुक्ताः ॥ ॥ ध्यान ॥ उटि त्याकावधुन्यागा
 ॥ ॥ ॐ नमः श्रीचक्रसंवाय ॥ स्नानथगिन ॥ धात ३ ॥ समन्वाहचं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मं सवसत्वाचवहाहगा ४ शुक्लवर्णं दिव्यं सवसात्मानं सावयन् ॥ ॥ थनहसु
२४० धन ॥ ॥ दक्षिणहसु मृकाचवचमधुलं ॥ वामहसु मृकाचवसूर्यम
धुलं ॥ ॐ वज्रयगहसु १३ ॥ ॐ ह्रीं ॥ स्वाहा ३ ॥ वाघट् ॥ ३ ३ हा ४ ॥ रुट् २
हं ॥ खड्ग ॥ वं हाया ३ ३ ३ ३ रुट् २ वं ॥ ॥ ॐ ३ स्वाहा ॥ वज्र ॥ ॐ हा स्वाहा
घ ४ ॥ ॐ वज्रसहस्रं मत्तकवज्रवत्तमनूरुवं वज्रधर्मगायनवज्रकर्मकुला रुव ४
॥ ॥ वज्रथगिन ॥ ॐ गकिज ३ ३ धात ३ ॥ मधुलथिल ॥ ॐ श्रीवज्रहहचूचक
३ रुट् गकिनी जालसंवच स्वाहा ॥ मं खथिय ॥ ॐ खधुवाह ३ रुट् ॥ पूजाएल

थिय॥ ॐ वज्रपूष्य स्वाहा ॥ धृथिय॥ ॐ वज्रधूपस्वाहा ॥ मगथिय॥ ॐ वज्रदीप
स्वाहा ॥ समयथिय॥ ॐ वज्रनेत्रयस्वाहा ॥ ॥ वलिसर्तखडा जाकि हायक ॥ ॥
श्रुकावा मूरवसर्वधर्मा धर्म साधनूत्य नत्वा ॐ श्री ४ रुं स्वाहा ॥ ॥ मंगलथिय॥
ॐ श्री ४ रुं स्वाहा ॥ ॥ बुद्धनू मंग्रया प्ररम्भ धन ॥ मंग्रक जा टक भू न्य गा रा व ॥ कंका
चलक माले मा पा ज धवा रू धी मू द्वा रू जा एक मूरवा जि न्ना रा व भवा धी कं भं सं व्य क पा ल
कलि भं ध्व ४ ॥ ग ॥ ग दान भ ध ॥ भ न व मंग्र व न प्र द रू ट का ध नू पा भं व र व द्वा ग स क म धु
लू भ न म प्र च वी धा न ग ध र्मि वा ग च क च न व जो व न सं प न्ना भू न्य गा भु रू रू द जी ॥ ॥

त्रिकोटावायपायस॥ ॐ श्रा ४ हूं ॥ ख. हा. लावी जगय॥ ॐ मृमृगमृमृगप्रवभय क्रीं हूं
॥ धनय॥ ॐ रुकाचहवगवर्ह हाकाचगंधनासनं क्री काचवीर्यहंगाचमृमृगाका
चंयुलावमृग॥ ॥ स्वरावयुवाव॥ पादार्घ्यमय॥ रगवन्ध्रीमकुी श्रीवन्ध्रीद
वीरुटावकाय पादार्घ्यमिदं स्वाहा॥ ॥ स्नानवाय॥ ॐ नमो रगवगवान्ध्रीदवीमृम
नं क्री स्वाहा॥ ॐ श्री हठपीथय स्वाहा॥ ॐ जालंधवपीथय स्वाहा॥ ॐ अठियानपी
थय स्वाहा॥ ॐ पूर्वमिनिपीथय स्वाहा॥ ॐ धर्मचक्राय स्वाहा॥ ॐ संहागचक्राय
स्वाहा॥ ॐ निर्माद्यचक्राय स्वाहा॥ ॐ महासूखचक्राय स्वाहा॥ ॥ पूजा. लास्या. स्नाय

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ध्यातव्यं ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
दशरूपं यद्विनाशं च कथयन्तु वाग्मिभिरुच्यते ॥ ॥ चूपाक्षं धवलाक्षं वदनाक्षं
धवलाक्षं संस्मृतं धवलाक्षं धवलाक्षं धवलाक्षं धवलाक्षं धवलाक्षं धवलाक्षं धवलाक्षं
ॐ सर्वमथागमधीवज्रहचक्रवज्र चक्रषामाहवज्र ॥ अथ शिवसुवज्र द्वाध्यायी श्रीव

ज्ञः वक्रया वागवदः संस्पृष्टसामसूर्यवदः सर्वयगनपूजेश्वर्यवदः पृथिवीधामुपागनी
आयधायुमाचली गङ्गाधामुवाकर्वली वायूधामुपमन्युध्वनी आकाशधामुपम
ज्ञापिनी ॥ ॥ पुनराश्रितिकालिपंक्तिमाध्वजकाचसूर्यमलुलंगत्माध्वजकाच
पञ्चिहसः समवर्तकसुवर्हः षड्भुजप्रथमभुजायां वदः २ घृष्टध्वजं दिगीयायां ख
पुनः समीपायः सुमीयायां उमचूखदांगः चतुर्भुजः कृष्णः धामः चक्रीयः काका
॥ ॥ उल्लेकाया धामाः ॥ धामायाजकः भुजबास्यापीना यमदाती कृष्णपीना
॥ ॥ धामायाजकः ॥ ॥ ५ इति नाचक धामा यममथनी धामकृष्ण ॥ ॥ दिगवधन

सूरनि सूरनि रूट ॥ ॐ ग २ रूट ॥ ॐ ग २ रूट ॥ ॐ आनय हारुगव
ना विद्या वा २ रूट ॥ ॥ ध्यान ॥ गगा आकार भजं का २ रूट ॥ ॐ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥
विश्ववर्ज गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥
कर्त्तृका पञ्च ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥ ध्यान ॥ गगा ॥
ॐ ॥ ॐ वज्रपाका चक्रं रूट ॥ ॐ वज्रपाका चक्रं रूट ॥ ॐ वज्रपाका चक्रं रूट ॥ ॐ वज्रपाका चक्रं रूट ॥
लगां सगां वज्र हात्मान लार्क रूट ॥ ॐ काचदिफा काच जाष्टुदिफा काच समीपमी वणिगानिदा
दिदिद्यान्त दय कीलयम् ॥ ॐ घघघाटय २ सर्व इष्टान् रूट ॥ ॐ कीलय २ सर्वयायान्

इंरुट् ॥ ॐ वज्रकीलयवज्रध्वजश्रावणयमि ॥ ॐ सर्वविघ्नविनायकानां कायवाक्किरु
वज्रकीलय २ इंरुट् ॥ ॐ वज्रमूत्रलीवज्रकीलयमाकाटय २ इंरुट् ॥ ॥ ॐ निनिर्वि
घ्नरावयत् ॥ ॥ गयस्वहृदयस्तु इंकात्रवीमिरिगदर्थकृत्वाश्रकनिष्ठुवनंगत्वाग
प्रश्रुतास्मांसादि धीवज्रसुवज्रसुवज्रगवगवगि समामधुलं पश्चिम् ॥ गगाहृदि
वसिमात्रगिरिवाकृष्टुष्टुनवक्रमाका ॥ ४ ॥ अशिमसुवमरिसंपूष समस्त समयमधु
लेप्रवरण समवसिष्ठमनामयाशिः पूजादवीर्यमयम् ॥ ॥ स्वरावशुद्धाः
॥ ॥ ॐ ॐ श्रीवज्रहृदयवज्रकप्रवचसुवाययायावमनार्द्यप्रगिष्ठ

ASHA ARCHIVES

3766

विनैरुंरुट् ॥ ॐ नमो वासुदेवाय ॥ धिनीकवालिनीरुंरुट् ॥ ॐ नमो संज्ञा
मिनीमाविहीसुप्रहृदिनीयवाहिनीरुंरुट् ॥ ॐ नमो जयविजयकंरुनीरुंरुनी
मोहनीरुंरुट् ॥ ॐ नमो वशिष्ठीवन्द्यावाहीवज्जगिनीकामशुचीखगम्बु
युंरुट् ॥ ॥ गदन्त्याय नमः ॥ ॐ कृष्णकाचिगम्बुमादिगमध्वमखिलानिहि
मंदाद्याहं प्रणिदंश्यामि पूजयामि पूजकचक्रसंभवविदधध्ववकखपुजिताह्वयि
नसर्गसंज्ञानिकृष्णलानिगम्बुमादिगानिवाधोसम्यक्प्रणिनामनमषचत्तजिन
गङ्गासि सर्वकावेनवाधेचिह्निदिदधध्वनूतुवमार्गगथागगङ्गान००

मृदियाम् ४ ममयसत्त्वज्ञानसत्त्व एकीकृत्योक्तिर्निर्गम्यते ॥ ॥ भिन्नसत्त्वेषु न
होय ॥ श्रीरिषे चतुर्मासं सर्वं तथा गृह्य श्रीरिषे कथं मया विप्रैः ॥ श्रीरिषे महावर्जं य
ध्वजं कनकमस्तु येषां कं पूजनां तथा मकूटं पंचकूलां रुवं ॥ ॥ भिन्नसत्त्वेषु न वि
य ॥ ॐ सर्ववृद्धं शुभं मम महामकूटं ममिच्छामि ॥ ॥ पंचवृद्धयामूद्रां कन ॥ ॐ
वज्रध्वजं श्वरीं श्रीरिषे ॥ ॐ सत्त्ववतीं श्रीरिषे ॥ ॐ चतुर्वतीं श्रीरिषे ॥
ॐ धर्मवतीं श्रीरिषे ॥ ॐ कर्मवतीं श्रीरिषे ॥ ॥ ध्यानशाय ॥
श्रीश्रीरिषे कृत्वा ममिच्छामि सर्ववृद्धं त्वं कृत्वा वज्रं सुसिद्धय ॥ व

आधिपतिस्वामिशिषिः श्रीमिवरुनामशिषिकनः॥ श्रीहनुकवडनामनथगनकाग
नामलुहवस्व॥ ॥ श्रीकर्मलदिपूयन्वासः॥ स्वानवायनिवस॥ ॥ ॐ श्री
वेदवनायस्वाहा॥ ॐ श्रीकात्यायस्वाहा॥ ॐ ब्रह्मसंवायस्वाहा॥ ॐ श्रीमिनाय
स्वाहा॥ ॐ श्रीमाधसिद्धयस्वाहा॥ ॐ वाचनायस्वाहा॥ ॐ मामकीयस्वाहा॥ ॐ या
धुवायस्वाहा॥ ॐ भावायस्वाहा॥ ॥ पंचायवाचपूजा॥ ताम्बाः काय॥ वाचना
दिचतुर्देवीः ॥ स्वगादिगथगन॥ संवृद्धावूः ॥ श्रीपंकुर्यागसूमाहिगः
॥ गव्यः ॥ ॐ यद्यः ॥ महास्त्रनसर्ववः ॥ ॥ थनकाययाय॥ ॥

आयस्वानमस्तु तस्य ॥ ॥ धूययाय ॥ ॥ अथ काय ॥ पादार्घ्यं ॥ एगव
ने श्रीमन्मन्त्रिचक्रसंवाचमस्तु लरुदाचकस्य ॥ ॥ अंगिष्ठस्वाहा ॥ ॥ स्नानवाय
॥ ॐ शक्तिनीयं ॥ ॐ चामायं ॥ ॐ खलु वाहाय ॥ ॐ वज्रक वा
टकं ॥ ॐ समयक वाटकं ॥ ॐ विममयक वाटकं ॥ ॐ समयवि
समयक वाटकं ॥ ॥ यंचा वाचप ॥ ॥ त्वासाः साय ॥ ॐ नमः श्रीचक्र
संवाच ॥ सर्वं ॥ नमस्तु ॥ अंगिष्ठस्वाहा ॥ चिंगामतिद्वीरुगं श्रीसम्बचन
मीस्तु ॥ ॥ नमस्तु ॥ ॥ अकाचयचमंदव ॥ ॥ अकाचसिद्धिरुगं ॥ ॥ अकाचरावध

न्यचईकावायनमासुग॥ ॥ ॐ निधीचक्रसम्बवदगुलिसमाफं॥ ॐ ॥
गगाकलधपूजामाह ॥ कलधमः भंखः वज्रगयाडः पंचसूयनं कनकाडः न्या
सक्राययाय ॥ ॐ सर्वगथागमहायागश्चवीई ॥ १०८ ॥ आपस्वानकलधमग
य ॥ भंखलंखगय ॥ ॐ वज्रामगादक००ई ॥ ॐ गफ२महागफस्वाहा ॥ ॐ मधु
किनीकलनूपविहाव ॥ ॥ ध्याययाय ॥ ॐ पृथिवीवकाचपत्रिगं नानाचलम
शंकः ॥ समाकाचजुक्कधमादगागजस्तं विहाय ॥ गदनूस्वस्वदवर्गाविचिंयस्वद
दी ॥ भयूर्याकूमे४ ह्मनसस्वमानी यपूजमादृष्टायायाचमनादिकं कृत्वादद्यागा ॥ गच

समयद्वगान्नद्वगप्रव(म)महाभा(गनद्वीरयवाधिविलम्बुपामगीरुगविक
यम् वदमंथिय॥ ॐ सर्वगथागममहाका(गम्बवम् स्तानवाय॥ ॥ ॐ वदय
कुङ्कुम् ॥ स्तम् ॥ ॥ थननिवाङ्गनयाय॥ पीकासमगमयाङ्गनय॥ ॐ आ४ वद
कात्तय२ कुङ्कुम् स्तम् ॥ मिसल्लिगय॥ ॐ आ४ वदवकु सर्वावचनमन्त्रापनयकु
कुङ्कुम् ॥ ॐ कापियागय॥ ॐ आ४ वदकुङ्कुम् सर्वपापविघ्नमात्रान्तरिङ्कुङ्कुम् स्तम्
हा॥ यकामयके॥ ॐ आ४ वदपू५ स्तम् संज्ञाव(धाषय२ कुङ्कुम् स्तम् ॥ धीचि(गम्भा
गय॥ ॐ आ४ वद२ सर्वॐन्द्रियवत्तवि(धन-वृन्वचयकुङ्कुम् स्तम् ॥ ॥ आचमि

[illegible]

[illegible]

ॐ श्रायवृक्षयस्वाहा ॥ ॐ यशवृक्षयस्वाहा ॥ ॐ धनवृक्षयस्वाहा ॥ ॐ प्रज्ञवृक्षय
स्वाहा ॥ ॐ संगानवृक्षयस्वाहा ॥ ॐ महसूयवृक्षयस्वाहा ॥ ॥ अथ मयान ॥ ॐ
नदायस्वाहा ॥ ॐ रुद्रायस्वाहा ॥ ॐ ऊषायास्वाहा ॥ ॐ सोम्यायस्वाहा ॥ ॐ कपिला
यस्वाहा ॥ ॐ पचागामा कथवज्रपूष्यप्रतिष्ठस्वाहा ॥ ॥ मन्त्राग ॥ ॐ वेधन
वायस्वाहा ॥ ॐ मानिरुद्रायस्वाहा ॥ ॐ पूर्णरुद्रायस्वाहा ॥ ॐ धनदायस्वाहा ॥ ॐ
वेधनदायस्वाहा ॥ ॥ पूजा लाम्पा समय ध्वमन ॥ गाय यधर्मा स्तोत्र ॥ ॥
सर्वव्यापिरवाग्रं सुमगाधिपतिर्जन ॥ ॐ धामुकं महाबाहो वै वाचनं तमाम्पहं ॥ ॥

ॐ नमोस्तुभ्यं सत्त्वाय । वक्रवत्त्राय गनमः ॥ नमस्तु वक्रधर्माय नमस्तु वक्रकर्म ॥ कलत्र
॥ २ ॥ नमस्तु वक्रधर्माय नमस्तु वक्रकर्म ॥ सोऽग्रागधर्माय नमस्तु वक्रधर्माय नमस्तु वक्रकर्म ॥ गरुड
॥ ३ ॥ नमस्तु वक्रधर्माय नमस्तु वक्रकर्म ॥ वक्रधर्माय नमस्तु वक्रकर्म ॥ कलिकया लघ
वन्दे वं महाकालेन मा म्भर्ह ॥ ॥ महाकालयाग ॥ ॥ चूकानवीजसंस्तुते सर्वकामा
र्थसिद्धिद ॥ नानात्रयध्वजं देवं वन्दे हं श्रीधनं कृत्यं ॥ सकंधनियाग ॥ ॥ प्रसीद स न
श्वनिदेवी महालक्ष्मी नमः ॥ धीनश्रीयाग ॥ ॥ नंदारुद्राजया सोम्याकपिलाचक्र्या
वती ॥ पंचागमाय नमः ॥ नमस्तु ग ॥ राग्रासयाग ॥ ॥ चूकानवीजनिजागं वैश्ववर्ध

महाकलं ॥ वेङ्कटेश्वरं वन्दे श्री धर्मत्रयं ॥ मन्त्राग ॥ ॥ श्रीलीलासनसंस्तुतं कल्या
नं मकूटकलं ॥ श्रीला कालीसमायागं समुचयं च मन्त्रं ॥ मरुनीयाग ॥ ॥ नन्वा श्रीवक्र
वावाही सर्वय पप्रमावनी ॥ मावविध्वं सनी दवीवृक्षं रु लदायनीम् ॥ सिद्धयाग ॥
॥ ॥ ध्वय ॥ कुरु न्यास ॥ मन्त्राय वक्रा यच्छास्यं च सुप्रनं कनक ॥ ॥ ध्यान ॥
मन्त्राय ॥ देवीकन्याचकान् मन्त्रिणी ॥ उगिगार्कससमावर्हं चारुवाचससमय
रं ॥ ॥ श्रीयमवर्हसमप्ररं ॥ मूढा ॥ गुरुजादिव्यामांकाया रुवसंनिता
॥ कथुरागमहान् ॥ रतप्रवाधं कुरु सवः कयालकलिभध

गजगथाय धाममनुवचप्रदा ॥ रुटकाधनूया भभ्वर खदा इमकमधु ॥ १ ॥
लम वीधामन नयमिचालनकने ॥ नवजीव रचाव धा प्रिनया ४ धुर सुदवी ॥
म रमय नदीरुगादिमदे ॥ श्रीचसागचनामाचवरुगघनमधूपमा ॥
सामयानं कन्यावजवेचावनीरुगा ॥ वेजावनीदहमधु रुनूकं रुजगडग
हर्लीकलीचरुकाश्चगस्यगर्गमर्गवग् ॥ ॥ न्यासजाययाय ॥ जायस्वानगय ॥ ॥
थनंलिधूपयाय ॥ रगवनभीमकुभीवीवचूदीदवीरुटानकणमावाधनायवजधूपंनि
र्याकयामिनमः ॥ ॥ निवाजनयायकलभयागथं ॥ मंत्रपाययावसगय ॥ नयम्ब

[illegible]

ॐ वाचसी देवी यस्मात् ॥ ॐ वज्रपूष्यप्रणिष्ठा ॥ ॥ पूजा-ला
वनीचं रा. अङ्गास्यसंगसंगिनी ॥ एकस्मिन्महावाक् अङ्गा
यस्य ॥ ॐ वज्रपूष्यमंदव ॥ धनवतिविय ॥ ॐ आ ४ द्रुं प्रणिका
यस्य वज्रपूष्यमंदव ॥ ॐ वज्रपूष्यमंदव ॥ ॐ वज्रपूष्यमंदव ॥
हि २ मममपाववावाय ॥ ॐ वज्रपूष्यमंदव ॥ ॐ वज्रपूष्यमंदव ॥
ध्वयातिअपाप्रणास ॥ याप्रयादउ नमं प्रयाप्रवज्रपूष्यमंदव ॥ ॐ वज्रपूष्यमंदव ॥
ध्वनयाय ॥ प्रयमं गावत्संगी ॥ ॐ वज्रपूष्यमंदव ॥ ॐ वज्रपूष्यमंदव ॥

[illegible]

॥ ॐ समयवि...यक जाठराग साहा ॥ ॥ पूजा. लास्या. समय. थ. मग. यध
लीलना. ...ममस्क. ग. कलकल्या. गिन. ग. नमस्क. व
की ॥ ॥ गा

पुपना. ...याथा. थ. ॥ मगरु. गाल. वा. सगन. गाय
॥ उषास. ...वादि. सं. उ. ॥ ॥ स्वरा. व. गु. द्वा. ॥ पादा. र्घ. ग. य. ॥
ग्री. श्र. मू. क. द. द. ॥ ॥ य. वा. र्घ. प्र. गि. क. सा. हा. ॥ ॥ ॥ स्वान. वा. य. ॥ ग्री. श्र. मू. क. द. व. गाय. सा. हा. ॥ ३ ॥
धाल. मं. उ. ल. थिल. ॥ ॥ ॐ. व. ज. रू. मी. x ॥ ॥ या. गा. स. न. वा. य. ॥ ॥ ॐ. व. ज. रू. व. र्ध. चूर्. र्ध. x ॥ ॥ सि. क. ल. नि

२२
क॥ ऊऊमका॥ स्नान॥ समय॥ श्व० मग॥ गाय॥ अधर्मा॥ ॥ स्नातृदवस्यचूपं॥ ॥ श्व
यातिअच॥ ॥ दग्गवतिविय॥ यंकनलवायूमधुलंजकाअल अग्निमंठ
लं० कंक
वृंमंदि
यप्रताऊनंविचिंम्यगप्ररुक्कादियविपूविर्गं
हिरंमाममयंचप्रदीपं चूपंनिष्ठाद्यवागाम
मनवरावृहं इवाचूपंरुलिर्गमद्यापि
यंसफकीचसमूडं पूयंचामर्ग
मवरेचवमृषमात्कारहाचकस्यार्थ

॥ ॥
स्वाहा ॥
स्वाहा ॥
हा कालाय स्वाहा ॥

ववाय स्वाहा ॥ अग्निगंगरेव वाय स्वाहा ॥
स्वाहा ॥ उं उमंगरेव
वाय स्वाहा ॥ उं संहानरेव वाय स्वाहा
स्वाहा ॥ उं वृषाय नीय स्वाहा ॥ उं कामाचीय
स्वाहा ॥ उं ॐ न्दाय नीय स्वाहा ॥ उं चामुक्षये
स्वाहा ॥ उं गंगाय नीय स्वाहा ॥ उं पट्टकनाथाय स्वाहा ॥ उं म
हाकालाय स्वाहा ॥ ॥ पूजा लास्या स्ताव ॥ उं अग्निगंगवृषेव चामुर्ककारुणेव च